14.11.2017 DAINIK - JAGRAN

राष्ट्रपति करेंगे ईश्वर-अर्जुन संवाद का लोकार्पण

रांची : शताब्दी वर्ष पर राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद परमहंस योगानंद की भागवत गीता पर विस्तृत व्याख्या 'ईश्वर-अर्जुन संवाद' के हिंदी संस्करण का लोकार्पण करेंगे। आयोजन योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से किया गया है। स्टेशन रोड स्थित आश्रम में भव्य आयोजन हो रहा है। इस मौके पर राज्यपाल द्रौपदी मुर्मु और मुख्यमंत्री रघुवर दास भी उपस्थित रहेंगे। राष्ट्रपति तीन बजे लोकार्पण करेंगे। यहां वे 45 मिनट तक रहेंगे। सोसाइटी के महासचिव स्वामी स्मरणानंद गिरि ने बताया कि आयोजन को लेकर तैयारी पूरी कर ली गई है। आश्रम सज-धजकर तैयार हो गया है। सरकार ने भी सड़कों की मरम्मत करा दी है।

देश-विदेश से पहुंचे भक्त : आश्रम में शरद संगम भी चल रहा है। इसमें भाग लेने के लिए देश-विदेश से हजारों लोग यहां पहुंचे हैं। क्रिया योग का अभ्यास कर रहे हैं।

योगदा आश्रम में की गई है आकर्षक विद्युत सज्जा • जागरण

योग का संदेश दे गए परमहंस योगानंद

परमहंस योगानंद का जन्म गोरखपुर में पांच जनवरी 1893 को हुआ था। संन्यास लेने से पहले उनका नाम मुकुंद लाल घोष था। बचपन से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। जब वे मात्र छह वर्ष के थे, तब उन्हें ईश्वर का दिव्य दर्शन हुआ, जिससे उनकी भक्ति-पिपासा और भी तीव्र हो गई। 11 वर्ष की उम्र में योगानंदजी की माता का अकस्मात निधन हो गया। इस त्रासदी ने योगानंद जी के पहले से ही आध्यात्मिक मन को तीव्र वैराग्य से भर दिया और जीवन के अंतिम सत्यों को समझने के लिए वे गुरु की खोज करने लगे। जगन्माता की कृपा से उनकी यह खोज बंगाल के श्रीरामपुर शहर में वास कर रहे एक संत, स्वामी युक्तेश्वर जी, के चरणों में आकार समाप्त हुई। स्वामी युक्तेश्वर जी के आश्रम में रहते हुए, किशोर मुकुंद ने क्रिया योग विज्ञान एवं कठोर अनुशासन के साथ-साथ श्रीमद् भगवद गीता, पतंजलि योग सूत्र एवं बाइबल के गूढ़ अर्थों को भी सीखा। गुरु की कृपा से उसी आश्रम में उन्हें ईश्वर-साक्षात्कार भी प्राप्त हुआ।

1918 में योगानंद जी महाराज ने विद्यालय को रांची में किया स्थानांतरित

1925 में सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप संस्था की स्थापना की

सन् 1915 में उनके गुरु ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी और उन का नाम रखा स्वामी योगानंद गिरि। अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने क्रिया योग विज्ञान के प्रचार के लिए एक संस्था की स्थापना की। 22 मार्च 1917 के दिन, पश्चिम बंगाल के आसनसोल जिले में स्थित डिहिका नाम के एक छोटे से गांव में उन्होंने 7 बच्चों को लेकर एक ब्रह्मचर्य विद्यालय शुरू किया। 1918 में उन्होंने उस विद्यालय को रांची में स्थानांतरित किया, जो परवर्ती काल में योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया बनी। 1920 में अपने गुरु से आशीर्वाद लेकर वे अमेरिका गए और वहां 1925 में उन्होंने एक और संस्था की स्थापना की, जिसका उन्होंने नाम रखा सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप।

योगानंद जी गांधी जी के साथ (फाइल फोटो)

परमहंस योगानंद क्रिया योग को वायुयान मार्ग कहते थे। क्रिया योग एक प्राचीन प्राणायाम विज्ञान है, जिसका उल्लेख हमें श्रीमद् भगवद गीता एवं पतंजलि के योग सूत्रों में भी मिलता है। लेकिन 19वीं सदी तक यह गुप्त विज्ञान गुरु द्वारा केवल योग्य शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से सिखाया जाता था।

उपलब्धि भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक संस्थाओं में से एक है सोसाइटी, देश-विदेश में जुड़े हैं श्रद्धालु

जोर-शोर से शताब्दी वर्षगांठ मना रही योगदा सत्संग सोसाइटी

जगमग कर रहा है योगदा आश्रम • जागरण

रांची : इस वर्ष योगदा सत्संग सोसायटी आफ इंडिया अपनी स्थापना की शताब्दी वर्षगांठ मना रही है। यह संस्था भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक संस्थाओं में से एक है। इसकी स्थापना श्री श्री परमहंस योगानंद द्वारा की गई है।

1917 में मिशन की शुरुआत: योगानंदजी ने अपने मिशन की शुरुआत 1917 में एक आदर्श जीवन विद्यालय की स्थापना के साथ की, जहां उन्होंने आधुनिक शिक्षा पद्धति को योग प्रशिक्षण एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संवर्द्धन के साथ जोड़ा। सन् 1925 में महात्मा गांधी इस विद्यालय में पधारे और उन्होंने लिखा, इस संस्था ने मेरे मन को अत्यधिक प्रभावित किया है।

23 संस्थाओं का संचालन

योगदा सत्संग सोसाइटी की धर्मार्थ सेवाओं में 23 आध्यात्मिक संस्थानों का संचालन सम्मिलित है। इन संस्थाओं में प्रारंभिक विद्यालयों से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय तक सम्मिलित हैं। इसके अलावा योगदा सत्संग सोसाइटी देश भर में योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी देती है। चिकित्सा के क्षेत्र में संस्था द्वारा धर्मार्थ अस्पतालों, क्लीनिक एवं चिकित्सा शिविर का संचालन किया जाता है। अनाथालयों और कुष्ठ रोगियों की कॉलोनियों को सहायता प्रदान की जाती है।

गांधी को दी क्रिया योग की दीक्षा

महात्मा गांधी एवं योगानंदजी की भेंट एक दशक बाद हुई, जब योगानंद सन् 1935-36 के दौरान यूरोप एवं मध्य-पूर्व भ्रमण के बाद भारत लौटे। गांधीजी के आग्रह पर योगानंदजी ने उन्हें तथा अनेक अनुयायियों को क्रिया-योग के आध्यात्मिक विज्ञान की दीक्षा प्रदान की।

1995 में प्रकाशित हुई टीका

योगानंदजी द्वारा भागवत गीता पर की गई टीका 1995 में प्रकाशित की गई। यह पुस्तक भगवान श्रीकृष्ण द्वारा ईश्वराकांक्षी योगियों को दिए गए मार्गदर्शन के एक गहनतर अर्थ पर ज्ञानवर्द्धक रूप से प्रकाश डालती है।